श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की | दुष्ट दलन रघुनाथ कला की || १ ||
जाके बल से गिरिवर कांपै | रोग दोष जाके निकट न झांपै || २ ||

अंजनि पुत्र महा बलदाई | संतन के प्रभु सदा सहाई || ३ ||
दे बीरा रघुनाथ पठाए | लंका जारि सिया सुधि लाये || ४ ||

लंका सो कोट समुद्र सी खाई | जात पवनसुत बार न लाई || ५ ||
लंका जारि असुर सब मारे | सियाराम जी के काज संवारे || ६ ||

लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े सकारे | लाय संजीवन प्राण उबारे || ७ ||
पैठि पताल तोरि जमकारे | अहिरावण की भुजा उखारे || ८ ||

बाईं भुजा असुर संहारे | दाईं भुजा संत जन तारे || ९ ||
सुर नर मुनि आरती उतारें | जय जय जय हनुमान उचारें || १० ||

कंचन थार कपूर लौ छाई | आरति करत अंजना माई || ११ ||
जो हनुमान जी की आरती गावे | बसि बैकुण्ठ परमपद पावे || १२ ||
लंक विध्वंस किए रघुराई | तुलसिदास प्रभु कीरति गाई || १३ ||

With Blessings :
'Mahadacharya' KALYANASASTRY AMANCHI
website : www.viswakalyanam.org, mailid : kalyanasastry@viswakalyanam.org,
17-38(B), Road Behind Ayyappa Temple, Ramamandir Street, CHIRALA,
Pin : 523 155, Prakasam District, (A.P.), INDIA.
India Ph. : 91-9248581234, Usa Ph. : 614+874+9133